# अध्याय - द्वितीय

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय - द्वितीय

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

## 2.1 परिचय

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पद हैं किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नींव के समान होता है जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है।

समस्या से संबंधित कार्य का पुनरावलोकन अनुसंधान आधार तथा गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान ने चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो अथवा सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य तथा प्रांरभिक चरण है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहां उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा दत्त संकलन का कार्य होता है–समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

## 2.2 साहित्य पुनरावलोकन से लाभ

1. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधान कर्ताओं द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता है।
2. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
3. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्त्ता का अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंर्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
5. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

## 2.3 शोध कार्य

इस अध्याय में समस्या से संबंधित शोध कार्यो का अध्ययन दो भागों में विभक्त किया गया है :–

1. विदेशों में किये गये शोध कार्य
2. भारत में किये गये शोधकार्य

# अध्याय - द्वितीय

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन


2.1 परिचय

2.2 साहित्य पुनरावलोकन से लाभ

2.3 शोध कार्य

2.3.1 विदेशों में किये गये शोधकार्य

2.3.2 भारत में किये गये शोधकार्य


"व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करते है, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भंडार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"

- बेस्ट (1959)

## 2.3.1 विदेशों में किये गये शोध कार्य

**हेन (1959)**

हेन ने 1959 में 71 पुस्तकों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जो कि इंग्लैण्ड, फ्राँस तथा पूर्वी जर्मनी के विद्यालयों के लिए निर्धारित की गई थी। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि ये पुस्तकें विद्यार्थियों की रूचि से अल्पसंबंधित है। इन पुस्तकों में सूचनाएँ यथार्थ अर्थात् लिखित रूप में दी गई थी। लेकिन उन सूचनाओं से संबंधित रंगीन चित्र तथा उदाहरण पर्याय मात्रा में नहीं है।

**लॉरी (1960)**

लॉरी ने पाठ्यपुस्तक के उपयोग से संबंधित आलोचनात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं यह पुस्तक बच्चों को पाठन कौशल प्रदान करती है। इन्होंने पाठ्यपुस्तक का कक्षा में कैसे उपयोग करना चाहिए, इस विषय पर उन्होंने अधिक प्रकाश डाला है। लेकिन कक्षा में शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तक लिखते समय क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए उस पर प्रकाश नहीं डाला है।

**क्रुग (1961)**

क्रुग ने पूर्वी जर्मनी तथा पश्चिमी जर्मनी की पाठ्यपुस्तकों की तुलनात्मक अध्ययन किया एवं निष्कर्ष निकाला कि सन 1959, 1960 तथा 1961 में इतिहास की प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों में यूरोपियन तथा जर्मन इतिहास के चित्र अलग-अलग दृष्टिगोचर होते है अर्थात् उनमें समानता नहीं है।

**एम. सी. गोल्डरिक (1961)**

इसी साल में गोल्डरिक ने अनुसंधान प्रक्रिया के कौशल के विकास पर जोर दिया। उसने सुझाव दिया कि वास्तविक अनुसंधान प्रक्रिया पाठ्यपुस्तक से ही शुरू होती है।

**डोमिनी (1963)**

डोमिनी ने 1963 में अमेरिका की गणित पाठ्यपुस्तकों की तुलना जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्राँस एवं रूस की गणित पाठ्यपुस्तकों से की। उसने निष्कर्ष निकाला कि इंग्लैण्ड, फ्राँस, जर्मनी तथा रूस से प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों की तुलना में अमेरिका की पाठ्यपुस्तकें अधिक तार्किक है।

**सोवियत एजुकेशन (1963)**

रूस आर्टिकल **"पार्टी प्रोग्राम डिजाईन"** रूस की सामाजिक स्थितियों का चित्रण करता है, जो कि पाठ्यपुस्तकों में लिखित सामग्रियों के योगदान पर आधारित हैं। इस प्रतिवेदन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि ये पाठ्यपुस्तकें निगमनात्मक शिक्षण विधि पर जोर देती है।

**ब्रानसॅन तथा स्कॉल्स (1963)**

इन्होंने 1915 में प्रकाशित विज्ञान पाठ्यपुस्तक की सामग्री की तुलना 1955 में लिखी गई

विज्ञान पाठ्यपुस्तक के साथ की और बताया कि 1955 में प्रकाशित विज्ञान पाठ्य पुस्तक में शैक्षणिक स्तर पर 1915 में प्रकाशित विज्ञान पाठ्यपुस्तक की तुलना में कम भार दिया गया है।

**नीमियर (1965)**

पाठ्यपुस्तक के अध्ययन के पश्चात उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह पाठ्यपुस्तकें समस्यात्मक धीमी गति से सीखने वाले और शैक्षणिक पिछड़े बच्चों के लिए कई विषयवस्तु उपलब्ध नहीं है।

**फ्लैडरमेन (1965)**

फ्लैडरमेन ने पाठ्यपुस्तकों की उपयोगिता पर जोर दिया ओर उसके लाभों को नीचे दर्शाया गया है :–

- पाठ्यपुस्तक का मूल्य मध्यम रखना।
- पाठ्यपुस्तक के उपयोग में प्रत्यास्थता।
- उपयोग में सरलता।

**ऑलसन् (1965)**

ऑलसन ने पाठ्यपुस्तक में शब्दकोश की उपयोगिता के समझ स्तर का परीक्षण किया और उसने पहली कक्षा के विद्यार्थियों में शब्दों को समझने की क्षमता सीमा को खोजा।

**अब्राह्म (1966)**

अब्राह्म ने यूनेस्को द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर गहन अध्ययन कार्य किया। इस अध्ययन द्वारा वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यूनेस्को का पाठ्यपुस्तकों को प्रकाशित करने के प्रयत्न की उपयोगिता नहीं है। अगर यूनेस्कों द्वारा शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की सहायता के लिए संदर्भ सामग्रियों तथा मार्गदर्शन पुस्तिकाओं का प्रकाशन करना उचित होगा।

**विलियन डी. रॉमे (1968)**

डब्लू डी. रामे ने सायरस विश्वविद्यालय में विज्ञान पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन के लिए एक उपकरण विकसित किया जिसका नाम है – **"Quantitative Analysis of Text Books and Laboratory Manuals."**

विज्ञान पाठ्यपुस्तक के मात्रात्मक विश्लेषण के लिए उसने अलग–अलग घटकों का सुझाव दिया (Text rating, figures and diagrams rating exercise rating, determining activities, index. and rating the summeries)

उसने इस उपकरण का वर्णन अपनी पुस्तक **"Inquiry Techniques for Teaching science."**

**लुंड्रे (1972)**

उसने कहा कि "पाठ्यपुस्तकों द्वारा इकाईयों के क्रम और विषयवस्तु के फैलाव से शिक्षण की योजना को मूर्त रूप देना और उसमें किसी सीमा तक सुधार लाना है यह निश्चित करना है। पाठ्यपुस्तक इन दोनों अवधारणाओं के मध्य में असमानता दर्शाती है।

**गैग्नैजा (1974)**

उसने विश्व के छः विकसित देशों की सामाजिक विज्ञान, भूगोल तथा इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया।

## 2.3.2 भारत में किये गये शोध कार्य

**बोस, सुकुमार एवं मोएत्रा, एम. (1965)**

इन्होनें पश्चिम बंगाल के विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया तथा पाठ्यपुस्तकों को पाठकों के अधिक रूचिकर बनाने हेतु तकनीकों का सुझाव दिया।

**डेविस तथा हॉकिन्स (1966)**

इन्होंने पाँचवी कक्षा की सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में अध्याय के अंत में दिए गए अभ्यास प्रश्नों का विश्लेषण किया। विकल्पों का यह विश्लेषण उन अवधारणाओं की पहचान करना था जो कि प्रश्नों के द्वारा वैचारणीय प्रक्रिया को बढ़ावा देते हैं।

वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि 86 प्रतिशत से 89 प्रतिशत प्रश्न सामान्यतः ज्ञान का परीक्षण करते है एवं संश्लेषण का परीक्षण करने वाले अभ्यास प्रश्न पूर्णतः अनुपस्थित है।

**एन.सी.ई.आर.टी. (1970-72)**

एन. सी. ई. आर. टी. के पाठ्यपुस्तक विभाग द्वारा पाठ्यपुस्तकों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया। उसमें अलग–अलग नौ अध्ययन किए गए। जिसमें मातृ–भाषा, द्वितीय भाषा, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, भौतिक, तथा जीव विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने ओर उनका मूल्यांकन करने के लिये सिद्धांतों तथा विधियों को विकसित किया गया है।

**मोहगांवकर, पी. (1990)**

मोहगावंकर द्वारा कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं की मराठी (मातृभाषा) पाठ्यपुस्तक में नैतिक मूल्यों का परीक्षण किया गया। पाठ्यपुस्तक में मानवीय मूल्यों का पर्याप्त रूप से प्रकीर्णन की खोज करना इन उद्देश्यों को उपरोक्त शोधकार्य में लिया गया। कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं की मराठी पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण तथा उपरोक्त शोंध कार्य में अनेक नैतिक व मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखा गया। इस अध्ययन से यह पाया गया कि कक्षा सातवीं के पाठ्यपुस्तक में चार गद्य तथा तीन पद्य समानता मूल्य पर आधारित है। तीनों कक्षा की पाठ्यपुस्तकों

में भाईचारा मूल्यों का संदर्भ नहीं है। कक्षा छठवीं के पाठ्यपुस्तक में स्वतंत्रता मूल्यों का संदर्भ नहीं हे, परन्तु कक्षा सातवीं, आठवीं के पाठ्यपुस्तक में स्वतंत्रता मूल्यों का संदर्भ है।

**खांडेकर, एम. पी. (1991)**

खांडेकर, एम. पी. नागपुर (महाराष्ट्र) द्वारा स्नातक स्तर के हिन्दी पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया गया। स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय के पाठ्यवस्तु में शैक्षिक मूल्यों का शोध करना, हिन्दी पाठ्यपुस्तक को क्षमता एवं कमियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर उपरोक्त अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में निम्न निष्कर्ष पाये गये – पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यों का प्रतिशत औसत से कम पाया गया। पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु में शैक्षिक मूल्यों के प्रति सार्थकता पायी गयी।

**वैज्ञ, डी. एस.(1991)**

इन्होंने कक्षा दसवीं की पदार्थ विज्ञान पाठ्यपुस्तक के पाठ्यवस्तु में जीवन/मानवीय मूल्यों का अध्ययन किया। विज्ञान को जीवन का आधारभूत बनाना एवं जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा में अंधविश्वास, भेद के प्रति विद्यार्थियों को अवगत कराना एवं सक्षम बनाना यह शोध के मुख्य उद्देश्य रखे गये। प्रस्तुत शोध कार्य में तुल्य समूह डिजाईन का प्रयोग किया गया। कक्षा दसवीं के 38 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन कर उनको 19 जोड़ियों में विभाजित किया। यह जोड़ियाँ कक्षा नवीं की पदार्थ विज्ञान विषय में वार्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों को ध्यान में रखकर बनाई गई थी। प्रदत्तों के संकलन के लिये दसवीं के पाठ्यपुस्तक में नाटकात्मक पद्धति एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये माध्य, प्रमाणिक विचलन, समालोचन अनुपात का प्रयोग किया गया। इस शोध कार्य में यह पाया गया कि विज्ञान विषय विद्यार्थियों के नैतिक विकास में मदद करता है, पदार्थ विज्ञान में मूल्यों के विकास के प्रति परम्परागत अध्यापन पद्धति से नाटकीय पद्धति अधिक प्रभावी है।

**अंबार्सू, एम. (1992)**

इन्होंने उच्च प्राथमिक शाला की अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तक में मूल्यों का शोध किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य तमिलनाडु शासन द्वारा प्रकाशित कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक में मूल्यों का शोध करना एवं कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं के विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति जागरूकता के स्तर का शोध करना है। देवाकोटाई जिले के कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं के कुल विद्यार्थियों में से 10 प्रतिशत विद्यार्थियों को चुना गया जिसमें से प्रत्येक कक्षा के 100 विद्यार्थी ऐसे कुल 300 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया हैं प्रदत्तों के संकलन के लिये प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, प्रमाणिक विचलन, प्रतिशत का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि कक्षा छठवीं, सातवीं के विद्यार्थियों में मूल्य जागृति का स्तर औसत रूप में है।

**करिअप्पा (1992)**

इन्होंने तमिल पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट मूल्यों की पहचान करने पर शोधकार्य किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं के तमिल पाठ्यपुस्तक के गद्य – पद्य में विद्यार्थियों की मूल्य जागृति की पहचान करना एवं ग्रामीण/शहरी क्षेत्र के शासकीय/अशासकीय स्कूल के विद्यार्थियों में मूल्य जागृति में भिन्नता (अगर है तो) की पहचान करना है। देवाकोटाई जिला के 120 माध्यमिक विद्यालयों में से 12 विद्यालयों को यादृच्छिक पद्धति से चुना गया। हर विद्यालय के 10 विद्यार्थी ऐसे कुल 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। ऑकड़ों का संकलन दो भागों में बाँटा गया प्रथम में लिंग, क्षेत्र एवं विद्यालय का व्यवस्थापना और दूसरे भाग में पाठ्यपुस्तक के गद्य–पद्य में मूल्यों का शोध करना समाविष्ट था। इस शोध में यह पाया गया कि कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं के विद्यार्थियों में पाठ्यपुस्तक के गद्य–पद्य द्वारा मूल्य जागृति स्तर से कम है तथा कक्षा छठवीं, सातवी, आठवीं के ग्रामीण विद्यार्थियों में पाठ्यपुस्तक के गद्य–पद्य द्वारा मूल्य जागृति स्तर ज्यादा है।

**वैशिष्टा, ए. (1996)**

सायन्स, रिलीजन, सुपरस्टीशियन स्कूल सायन्स–वैज्ञानिक अभिवृत्ती एवं मूल्यों के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को जागृत कर समाज से अंधश्रद्धा दूर करने की आवश्यकता है। कुछ वैज्ञानिक मूल्य जैसे वैज्ञानिक दृष्किोण, सहनशीलता, शोध प्रवृत्ति, सत्यता के बारे में विद्यार्थी तथा शिक्षक को अवगत कराना चाहिए।

**पंत, डी. (2000)** : कन्वेइंग दी वैलू ऑफ सायन्स थ्रू सायन्स टैक्सटबुक

कक्षा नवीं एवं दसवीं की एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित विज्ञान पाठ्यपुस्तक के विषयवस्तु पर जो विश्लेषणात्मक कार्य किये गये उस पर यह लेख आधारित है। यह शोधकार्य माध्यमिक स्तर के विज्ञान शिक्षा के उद्देश्यों के संदर्भ मे किये गये थे। लेखक के अनुसार अगर विज्ञान विषय वस्तु में सत्यता मूल्य है तो पाठ्यपुस्तक में सामाजिक संदर्भ पर्याप्त रूप में निश्चित पाये जाते है। पाठ्यक्रम विकास विभाग द्वारा विकसित की गयी क्रिया को पाठ्यपुस्तक के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए प्रयोग में लाया गया है।

**ललिता, पी. आर. (2001)** : वैल्यू इनकलकेशन इन दी कॉन्टेक्स्ट ऑफ सायन्स

प्रस्तुत लेख विज्ञान पाठ्यपुस्तक में निर्मिती की पद्धति कैसी होनी चाहिए एवं विनाशकारी विपत्ति के समय विज्ञान का उपयोग मानव के हित में कैसे करना चाहिए इस पर आधारित है। लेखक ने यह पाया है कि समाज में अंधविश्वास की जो समस्या है उसे रोकने की विज्ञान विद्यार्थियों की जिम्मेदारी है। विज्ञान शिक्षा ऐसे मूल्य निर्माण करना चाहती है कि जिससे मानव में खोज प्रवृत्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव, आविष्कारक शक्ति का निर्माण हो। लेखक यह निवेदन करता है, कि वैज्ञानिक तकनीकी के प्रयोग से विद्यार्थियों में मूल्य निर्माण करना चाहिए।